ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(6): 108-119
www.allresearchjournal.com
Received: 25-03-2024
Accepted: 29-04-2024

नवीन कुमार
शोध अध्येता, भूगोल विभाग, नेट (यू जी सी) -2017, ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सौरभ कुमार झा
शोध अध्येता, प्राणि विज्ञान विभाग, नेट (यू जी सी) -2022, गेट-2024, ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
नवीन कुमार
शोध अध्येता, भूगोल विभाग, नेट (यू जी सी) -2017, ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

साक्षरता स्तर और श्रमिक सहसंबंध गुणांक: बेगुसराय जिले के गढ़पुरा सामुदायिक विकास खंड का एक अध्ययन

नवीन कुमार, सौरभ कुमार झा

प्रस्तावना

साक्षरता और अर्थव्यवस्था का संबंध

साक्षरता और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध गहरा और बहुआयामी है। इस संबंध के कई प्रमुख पहलुओं को देखने पर हम पाते हैं कि, साक्षरता मानव पूंजी के विकास के लिए मौलिक है, जो व्यक्तियों के ज्ञान, कौशल और क्षमताओं को संदर्भित करती है। एक साक्षर आबादी कार्यबल में भाग लेने, आजीवन सीखने में संलग्न रहने और बदलती आर्थिक मांगों के अनुकूल ढलने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित है। परिणामस्वरूप, साक्षरता में निवेश से अधिक कुशल और उत्पादक कार्यबल तैयार होता है, जो आर्थिक वृद्धि और विकास के लिए आवश्यक है।

सबसे आम अवधारणा जो प्रचलित है वह यह है कि साक्षरता का रोजगार योग्यता और कमाई की क्षमता से गहरा संबंध है। उच्च स्तर की साक्षरता वाले व्यक्तियों में कम साक्षरता कौशल वाले लोगों की तुलना में रोजगार सुरक्षित करने और उच्च आय अर्जित करने की अधिक संभावना होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि साक्षरता व्यक्तियों को नौकरी के व्यापक अवसरों तक पहुंचने में सक्षम बनाती है, जिनमें उन्नत कौशल और ज्ञान की आवश्यकता वाले अवसर भी शामिल हैं। क्योंकि, साक्षरता व्यक्तियों को जानकारी तक पहुंचने, विचारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने और प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम बनाकर नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देती है। नवाचार द्वारा संचालित अर्थव्यवस्थाओं में, जैसे ज्ञान-आधारित या प्रौद्योगिकी-संचालित क्षेत्रों में, नए विचारों को उत्पन्न करने, व्यवसाय शुरू करने और आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने के लिए एक साक्षर कार्यबल आवश्यक है।

चूंकि उत्पादकता स्तर और साक्षरता समानांतर चलती है, साक्षरता गरीबी उन्मूलन प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह व्यक्तियों को शिक्षा, प्रशिक्षण और आर्थिक अवसरों तक उनकी पहुंच में सुधार करके गरीबी से बाहर निकलने के लिए सशक्त बनाता है।

इसके अलावा, साक्षर व्यक्ति अपने स्वास्थ्य, वित्त और समग्र कल्याण के बारे में सूचित निर्णय लेने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं, जो अंतर-पीढ़ीगत गरीबी के चक्र को तोड़ने में योगदान दे सकते हैं। कोई भी आसानी से देख सकता है कि साक्षरता व्यक्तियों और समुदायों के बीच संचार, समझ और सहयोग को बढ़ावा देकर सामाजिक सामंजस्य और स्थिरता को बढ़ावा देती है। उच्च साक्षरता दर वाले समाजों में, अक्सर अधिक राजनीतिक भागीदारी, सामाजिक गतिशीलता और संस्थानों में विश्वास होता है, जो सभी आर्थिक विकास के लिए अनुकूल होते हैं। इसके व्यापक परिप्रेक्ष्य तेजी से बढ़ती वैश्विक अर्थव्यवस्था में पाए जा सकते हैं, वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धा बनाए रखने के लिए साक्षरता आवश्यक है। उच्च साक्षरता दर वाले देश वैश्विक आर्थिक रुझानों को अपनाने, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लेने और विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए बेहतर स्थिति में हैं। इसके अलावा, आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी और नवाचार में प्रगति का लाभ उठाने के लिए एक साक्षर कार्यबल महत्वपूर्ण है। कुल मिलाकर, साक्षरता और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध सहजीवी है: साक्षरता आर्थिक अवसरों और समृद्धि को बढ़ाती है, जबकि आर्थिक विकास साक्षरता पहल में निवेश करने के लिए संसाधन और प्रोत्साहन प्रदान करता है। इसलिए, सतत आर्थिक वृद्धि और विकास को बढ़ावा देने की चाहत रखने वाली सरकारों, व्यवसायों और नागरिक समाज संगठनों के लिए साक्षरता को बढ़ावा देना प्राथमिकता होनी चाहिए।

कार्यबल और साक्षरता स्तर

कार्यबल का साक्षरता स्तर आर्थिक उत्पादकता, प्रतिस्पर्धात्मकता और सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। यहां हम उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं कि कार्यबल का साक्षरता स्तर विभिन्न पहलुओं को कैसे प्रभावित करता है। एक साक्षर कार्यबल आम तौर पर अधिक उत्पादक होता है क्योंकि साक्षरता कौशल कर्मचारियों को निर्देशों को समझने, सूचनाओं को संसाधित करने और प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम बनाता है। चाहे वह मैनुअल पढ़ना हो, रिपोर्ट लिखना हो, या डेटा की व्याख्या करना हो, कार्यों को कुशलतापूर्वक और सटीकता से करने के लिए साक्षरता आवश्यक है।

उच्च साक्षरता स्तर श्रमिकों को नौकरी की आवश्यकताओं के साथ बेहतर ढंग से मेल खाने की अनुमति देता है। नियोक्ता अक्सर मजबूत साक्षरता कौशल वाले उम्मीदवारों की तलाश करते हैं, खासकर स्वास्थ्य देखभाल, प्रौद्योगिकी, वित्त और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में। पर्याप्त साक्षरता स्तर वाला कार्यबल बदलती नौकरी की माँगों और तकनीकी प्रगति के प्रति अधिक अनुकूल होता है। साक्षरता रोजगार योग्यता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। कम साक्षरता स्तर वाले व्यक्तियों को कार्यबल में प्रवेश करने में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है या वे कम-कुशल, कम वेतन वाली नौकरियों तक ही सीमित रह सकते हैं। इसके विपरीत, उच्च साक्षरता स्तर वाले लोगों के पास रोजगार के व्यापक अवसरों तक पहुंच होती है, जिसमें उच्च वेतन और अधिक नौकरी सुरक्षा वाले पद शामिल हैं। साक्षरता का स्तर आय के स्तर से संबंधित है। उच्च साक्षरता कौशल वाले श्रमिकों को कम साक्षरता स्तर वाले लोगों की तुलना में अधिक वेतन मिलता है। यह आय असमानता सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को दूर करने और ऊर्ध्वगामी गतिशीलता को बढ़ावा देने में साक्षरता के महत्व को रेखांकित करती है।

साक्षरता कार्यबल के भीतर नवीनता और रचनात्मकता को बढ़ावा देती है। मजबूत साक्षरता कौशल वाले कर्मचारी गंभीर रूप से सोचने, समस्याओं को हल करने और नए विचार उत्पन्न करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं। यह उन उद्योगों में विशेष रूप से प्रासंगिक है जो नवाचार पर निर्भर हैं, जैसे अनुसंधान और विकास, डिजाइन और रचनात्मक उद्योग। एक साक्षर कार्यबल के आजीवन सीखने और व्यावसायिक विकास में संलग्न रहने की अधिक संभावना होती है। मजबूत साक्षरता कौशल वाले कर्मचारी प्रशिक्षण सामग्री तक पहुंचने और समझने, कार्यशालाओं में भाग लेने और आगे की शिक्षा के अवसरों को हासिल करने, अपने कौशल को बढ़ाने और नौकरी बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहने में बेहतर सक्षम होते हैं।

साक्षरता विविध पृष्ठभूमि के कर्मचारियों के बीच प्रभावी संचार और सहयोग की सुविधा प्रदान करके कार्यबल के भीतर सामाजिक सामंजस्य में योगदान देती है। एक

साक्षर कार्यबल सांस्कृतिक मतभेदों को समझने और उनका सम्मान करने, अधिक समावेशी और सामंजस्यपूर्ण कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित है।

यह कम से कम नहीं है बल्कि कार्यस्थल में स्वास्थ्य और सुरक्षा नियमों, प्रक्रियाओं और दस्तावेज़ीकरण को समझने के लिए साक्षरता महत्वपूर्ण है। कम साक्षरता स्तर वाले कर्मचारियों को सुरक्षा निर्देशों या चेतावनी संकेतों को समझने में कठिनाई हो सकती है, जिससे दुर्घटनाओं और चोटों का खतरा बढ़ जाता है। इन सभी परिकल्पनाओं के अनुसार, कार्यबल का साक्षरता स्तर आर्थिक और सामाजिक विकास के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है, जो कार्यबल क्षमताओं को बढ़ाने और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए साक्षरता शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण में निवेश के महत्व पर प्रकाश डालता है।

अध्ययन - क्षेत्र

गढ़पुरा ब्लॉक भारत के बिहार राज्य के बेगुसराय जिले में स्थित है। बेगुसराय जिला बिहार के उत्तरी भाग में स्थित है। गढ़पुरा, बेगुसराय जिले के 18 ब्लॉकों में से एक प्रशासनिक ब्लॉक है। गढ़पुरा प्रखंड एनआईसी बिहार राज्य केंद्र, पटना के मानचित्र पर $86^0$7'10.06104'' पुरब से $86^0$15'24.9732'' पूर्वी देशांतर रेखा और $25^0$35'28.4622'' उत्तर से $25^0$43'7.17132'' उत्तर अक्षांश रेखा तक फैले निर्देशांक के बीच स्थित भूभाग में फैला हुआ है। इस प्रखंड की अधिकतम लंबाई उत्तर से दक्षिण तक 8.11 मील है और पूर्व से पश्चिम तक अधिकतम चैड़ाई 5.96 मील है। गढ़पुरा प्रखंड का कुल क्षेत्रफल 61.37 वर्ग किलोमीटर है (जनगणना जिला सार, भाग-बी, 2011)। क्षेत्रफल की दृष्टि से गढ़पुरा प्रखंड बेगूसराय जिले के अन्य प्रखंडों की तुलना में 11वें स्थान पर है। गढ़पुरा प्रखंड बिहार राज्य में बेगूसराय जिला के उत्तरी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण विकास प्रखंड है जो उत्तर और पूर्व में समस्तीपुर जिले के हसनपुर ब्लॉक और दक्षिण-पूर्व में बिथान ब्लॉक द्वारा सीमांकित है। बखरी, नाओकोठी ब्लॉक और चेरिया बरियारपुर ब्लॉक दक्षिण में अध्ययन क्षेत्र की सीमा का परिसीमन करते हैं तथा छौराही ब्लॉक पश्चिम और उत्तर में गढ़पुरा की सीमा का निर्धारित करता है। गढ़पुरा प्रखंड बेगूसराय जिले के महत्वपूर्ण प्रखंडों में से एक है जो यहां की प्रचलित स्थानीय कृषि गतिविधियों के लिए जाना जाता है। गढ़पुरा ब्लॉक कार्यालय इस तालुक का मुख्य विपणन केंद्र है जहां से कृषि और अन्य कार्यों से संबंधित ऑर्डर और कार्य संसाधित किए जाते हैं।

तालिका 1: बेगुसराय जिला: गढ़पुरा ब्लॉक का प्रशासनिक प्रभाग

ब्लॉक का नाम	क्रम संख्या	ग्राम पंचायत	क्षेत्रफल वर्ग किमी.	गांवों की संख्या	गांवों का नाम
गढ़पुरा	1	दुनही	8.89	7	बिजयनारायण, कनौसी, दुनही, गढ़, मानिकपुर, खेराज, जगदीशपुर नरोत्तम
	2	कोरई	11.94	4	कोराई, हरकपुरा, सुगनपुरा, सिल्हाटाडोम
	3	कुम्हारसों	10.49	4	बेजहा, बुजुर्गाबाद, भंसी, कुम्हारसों,
	4	मालीपुर	10.38	7	मोर्टार, जगन्नाथपुर, जगन्नाथपुर, मालीपुर, मुसेपुर, जगरनाथपुर, मालपुर
	5	मौजी हरी सिंह	8.03	6	शीतलरामपुर, मौजी हरि सिंह, मौजी थान सिंह, बरियारपुर, खखरुआ, इमादपुर
	6	रजौर	11.06	3	सकरा, रजौर, बेजहा
	7	सोनवन	7.79	2	सोनवन, परानपुर
	8	कोरियामा	6.54	2	कोरियामा, भुइंधारा
	9	गढ़पुरा	8.60	2	गढ़पुरा, पतहराबाद
स्रोत: बिहार जनगणना पुस्तिका (भाग ए), भारत की जनगणना, - 2011					कुल = 37

यहां हम देखते हैं कि गढ़पुरा ब्लॉक की कोराई पंचायत 11.94 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के साथ सबसे बड़ी पंचायत है] कोरियामा 6.54 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के साथ ब्लॉक की सबसे छोटी राजस्व पंचायत है।

गढ़पुरा प्रखंड: जनसंख्या वितरण प्रतिरूप

जैसा कि तालिका से यह देखा जा सकता है कि कुल जनसंख्या का प्रतिशत अलग-अलग पंचायतों में अलग-अलग है] जिसका मान कोरियामा ग्राम पंचायत में न्यूनतम 6.75 प्रतिशत से गढ़पुरा राजस्व ग्राम पंचायत में अधिकतम 13.24 प्रतिशत तक है।

कुल मिलाकर] जनसंख्या का वितरण सूचीबद्ध पंचायतों के बीच कुछ हद तक समान रूप से फैला हुआ प्रतीत होता है] जिसमें कोई चरम सीमा नहीं है।

तालिका 2: गढ़पुरा प्रखंड का जनसंख्या वितरण प्रतिरूप

क्र.सं.	पंचायत का नाम	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या (% में)
1	दुनही	11263	10.22
2	गढ़पुरा	14594	13.24
3	कोराई	13467	12.22
4	कोरियामा	7442	6.75
5	कुम्हारसन	13586	12.33
6	मालीपुर	13492	12.24
7	मौजी हरि सिंह	12838	11.65
8	राजौर	10491	9.52
9	सोनवां	13041	11.83
गढ़पुरा ब्लॉक		110214	100

सूक्ष्म स्तर पर जनसंख्या के वितरण में सामान्य एवं अनियमितता भूमि उपयोग पैटर्न को अलग-अलग रूप से प्रभावित करती है। लेकिन इसके लिए जनसंख्या के वितरण में किसी भी प्रकार की एवं नियमितता सुनिश्चित कर पैटर्न का निर्धारण करना आवश्यक है। जनसंख्या पैटर्न के निर्धारण में परिवारों की जनसंख्या भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जिसके आधार पर जनसंख्या का स्तर निर्धारित किया जा सकता है।

साक्षरता का स्तर

साक्षरता का डेटा अनिवार्य रूप से स्थिरता और निरंतर विकास लाने का एक उपकरण है! साक्षरता समाज के विभिन्न पहलुओं में स्थिरता को बढ़ावा देने और सतत विकास को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस तरह:

आर्थिक विकास: साक्षरता व्यक्तियों को अर्थव्यवस्था में प्रभावी ढंग से भाग लेने में सक्षम बनाती है। यह रोजगार, उद्यमिता और नवाचार के अवसर खोलता है, जो आर्थिक विकास के लिए आवश्यक हैं। एक साक्षर कार्यबल तकनीकी प्रगति को अपनाने और कृषि से लेकर प्रौद्योगिकी तक के उद्योगों में योगदान करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित है।

सामाजिक विकास: साक्षरता व्यक्तियों को अपने समुदायों में सार्थक रूप से संलग्न होने के लिए सशक्त बनाकर सामाजिक समावेश और एकजुटता को बढ़ावा देती है। यह सामाजिक मुद्दों की बेहतर समझ को बढ़ावा देता है, नागरिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और विभिन्न समूहों के बीच विचारों और ज्ञान के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है।

स्वास्थ्य और कल्याण: साक्षरता का स्वास्थ्य परिणामों से गहरा संबंध है। यह लोगों को महत्वपूर्ण स्वास्थ्य जानकारी तक पहुंचने और समझने, उनकी भलाई के बारे में सूचित निर्णय लेने और स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों को प्रभावी ढंग से नेविगेट करने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, साक्षर व्यक्तियों में स्वस्थ

व्यवहार और प्रथाओं को अपनाने की अधिक संभावना होती है, जिससे समग्र स्वास्थ्य परिणामों में सुधार होता है।

पर्यावरणीय स्थिरता: साक्षरता पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता और समझ को बढ़ावा देकर पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान करती है। यह व्यक्तियों को स्थायी प्रथाओं में संलग्न होने, पर्यावरण संरक्षण की वकालत करने और जलवायु परिवर्तन को कम करने और प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने के उद्देश्य से पहल में भाग लेने के लिए सशक्त बनाता है।

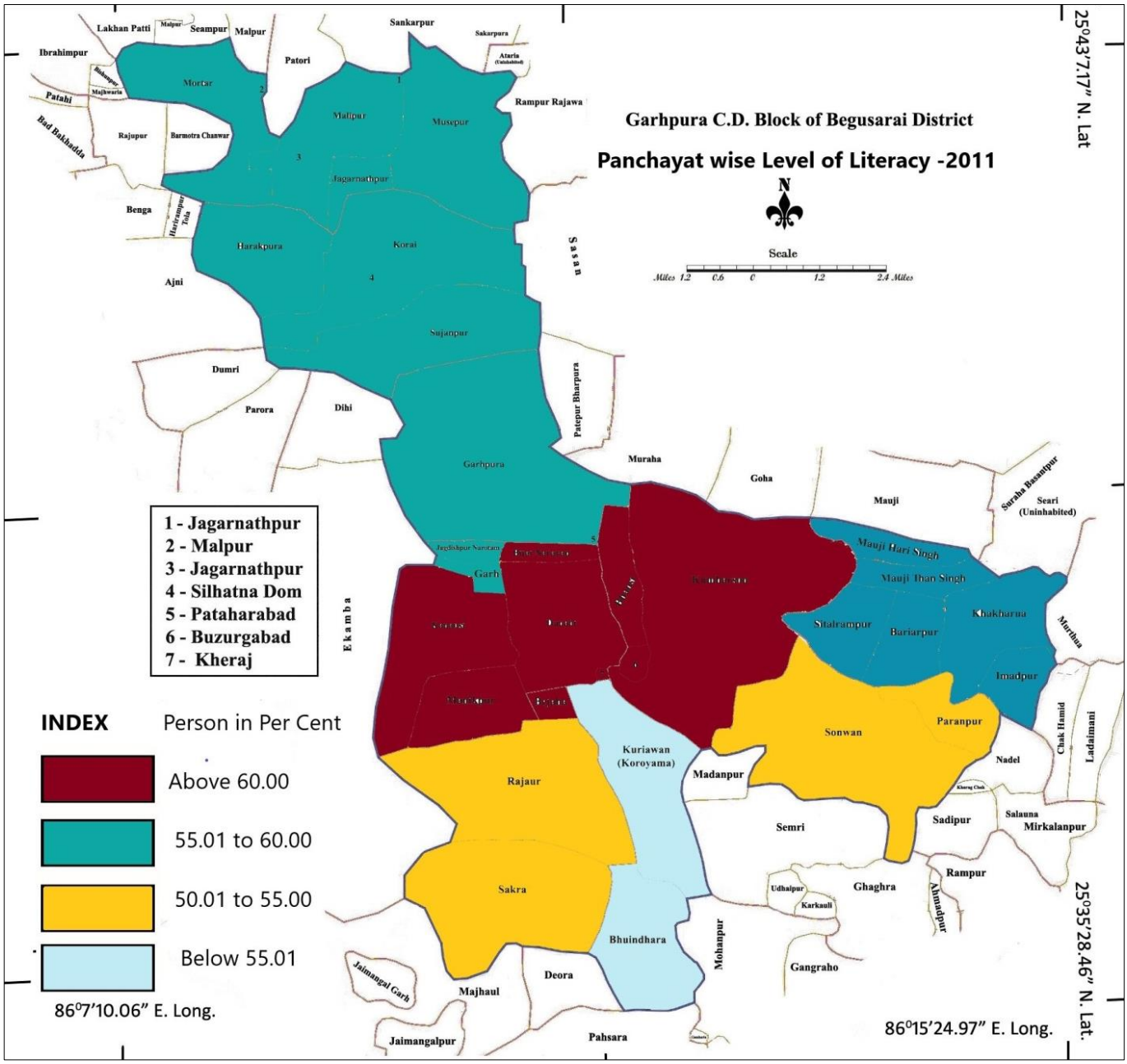

उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर, हम विभिन्न पंचायतों में साक्षरता स्तर देख सकते हैं। दुनही में साक्षरता का स्तर उच्चतम 60.38% है, जो इसकी आबादी के बीच शिक्षा के अपेक्षाकृत उच्च स्तर को दर्शाता है। गढ़पुरा 59.29% के साक्षरता स्तर के साथ दुनही से काफी पीछे है, जो समान शैक्षणिक माहौल का सुझाव देता है। दुनही और गढ़पुरा के बराबर, कुम्हारसाना का साक्षरता स्तर भी 60.18% है। मालीपुर, मौजी हरि सिंह और राजौर में साक्षरता स्तर 56.14% से 56.32% के बीच है, जो शिक्षा के मध्यम उच्च स्तर का संकेत देता है। कोराई का साक्षरता स्तर 55.39% है, जो औसत से थोड़ा कम है, लेकिन फिर भी अन्य क्षेत्रों की तुलना में

अपेक्षाकृत अधिक है। सोनावन और कोरियामा में साक्षरता का स्तर क्रमशः 50.82% और 49.52% कम है, जो दर्शाता है कि इन क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए अधिक ध्यान और संसाधनों की आवश्यकता हो सकती है।

कुल मिलाकर, सभी पंचायतों में औसत साक्षरता स्तर 55.83% है, जो बताता है कि इस क्षेत्र में आम तौर पर साक्षरता का स्तर मध्यम से उच्च है। हालाँकि, विभिन्न पंचायतों में भिन्नताएँ हैं, कुछ का प्रदर्शन दूसरों की तुलना में बेहतर है। यह डेटा नीति निर्माताओं और शिक्षकों के लिए उन क्षेत्रों की पहचान करने में उपयोगी हो सकता है जिनमें सुधार की आवश्यकता है और क्षेत्र में शैक्षिक मानकों को ऊपर उठाने के लिए तदनुसार संसाधनों का आवंटन किया जा सकता है। विभिन्न पंचायतों में साक्षरता स्तर पर उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के आधार पर, कई निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं:

असमानताएँ मौजूद हैं: पंचायतों के बीच साक्षरता के स्तर में उल्लेखनीय असमानताएँ हैं, कुछ क्षेत्रों में दूसरों की तुलना में काफी अधिक दर है। यह इंगित करता है कि शैक्षिक प्राप्ति को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक या ढांचागत कारक हो सकते हैं।

क्षेत्रीय भिन्नताएँ: जहाँ कुछ पंचायतें अपेक्षाकृत उच्च साक्षरता स्तर का दावा करती हैं, वहीं अन्य पीछे हैं। इससे पता चलता है कि शिक्षा तक पहुंच, स्कूलों की गुणवत्ता या सीखने के प्रति सांस्कृतिक दृष्टिकोण में क्षेत्रीय अंतर हो सकते हैं।

लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता: कम साक्षरता स्तर वाली पंचायतें, जैसे कोरियामा और सोनावन, को साक्षरता दर और शैक्षिक परिणामों में सुधार के लिए शिक्षा के बुनियादी ढांचे, शिक्षक प्रशिक्षण और सामुदायिक भागीदारी में लक्षित हस्तक्षेप और निवेश की आवश्यकता हो सकती है।

सफलता की कहानियाँ: दुनही, गढ़पुरा और कुम्हारसाना जैसी पंचायतें दर्शाती हैं कि क्षेत्र के भीतर उच्च साक्षरता दर हासिल करना संभव है। उनकी सफलता में योगदान देने वाले कारकों को समझने से अन्य क्षेत्रों में साक्षरता में सुधार के लिए रणनीतियों की जानकारी मिल सकती है।

औसत साक्षरता स्तर: 55.83% का औसत साक्षरता स्तर बताता है कि, कुल मिलाकर, इस क्षेत्र में साक्षरता का स्तर मध्यम से उच्च है। यह एक सकारात्मक संकेत है लेकिन यह सुधार की गुंजाइश को भी रेखांकित करता है, खासकर कम साक्षरता दर वाले क्षेत्रों में।

नीति निहितार्थ: नीति निर्माता इस डेटा का उपयोग शिक्षा पहल को प्राथमिकता देने, संसाधनों को प्रभावी ढंग से आवंटित करने और विभिन्न पंचायतों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हस्तक्षेप तैयार करने के लिए कर सकते हैं। इसमें स्कूल के बुनियादी ढांचे में सुधार, शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच का विस्तार और शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने की पहल शामिल हो सकती है।

निष्कर्षत: डेटा शिक्षा में असमानताओं को दूर करने के महत्व को रेखांकित करता है और पूरे क्षेत्र में साक्षरता स्तर में सुधार के लिए लक्षित हस्तक्षेप के अवसरों पर प्रकाश डालता है। शिक्षा को प्राथमिकता देकर और साक्ष्य-आधारित नीतियों को लागू करके, क्षेत्र यह सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर सकता है कि सभी पंचायतों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आजीवन सीखने के अवसर उपलब्ध हों।

प्राथमिक क्षेत्र में लगे कार्यबल का वितरण

प्राथमिक क्षेत्र, जिसमें कृषि, वानिकी, मछली पकड़ने, खनन और अन्य निष्कर्षण उद्योग शामिल हैं, में शामिल श्रमिकों का अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है:

आर्थिक महत्व: प्राथमिक क्षेत्र अक्सर कई अर्थव्यवस्थाओं की रीढ़ बनता है, खासकर विकासशील देशों में। इस क्षेत्र की गतिशीलता को समझने से नीति निर्माताओं को प्रभावी आर्थिक विकास रणनीतियाँ तैयार करने में मदद मिलती है।

रोज़गार: वैश्विक कार्यबल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा

प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत है। इन श्रमिकों का अध्ययन करने से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के पैटर्न, श्रम की स्थिति और रोजगार के अवसरों को समझने में मदद मिलती है।

खाद्य सुरक्षा: कृषि, प्राथमिक क्षेत्र का एक प्रमुख घटक, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। कृषि श्रमिकों का अध्ययन कृषि उत्पादकता में सुधार, खाद्य वितरण से संबंधित मुद्दों को संबोधित करने और भोजन की कमी को कम करने में मदद करता है।

पर्यावरणीय प्रभाव: प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियों में महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभाव हो सकते हैं, जैसे वनों की कटाई, मिट्टी का क्षरण, जल प्रदूषण और निवास स्थान का विनाश। इस क्षेत्र में श्रमिकों का अध्ययन टिकाऊ प्रथाओं को विकसित करने और पर्यावरणीय क्षरण को कम करने में मदद करता है।

प्रौद्योगिकी और नवाचार: प्राथमिक क्षेत्र में श्रमिकों पर शोध करने से उत्पादकता बढ़ाने, लागत कम करने और समग्र दक्षता में सुधार करने के लिए नई प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं के विकास और अपनाने को बढ़ावा मिल सकता है।

ग्रामीण विकास: प्राथमिक क्षेत्र अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में केंद्रित होता है। ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने और गरीबी कम करने के लिए ग्रामीण श्रमिकों की आजीविका और उनकी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को समझना महत्वपूर्ण है।

आपूर्ति श्रृंखला: कई माध्यमिक और तृतीयक क्षेत्र के उद्योग प्राथमिक क्षेत्र से प्राप्त कच्चे माल पर निर्भर हैं। प्राथमिक क्षेत्र के श्रमिकों का अध्ययन आपूर्ति श्रृंखला की गतिशीलता को समझने और डाउनस्ट्रीम उद्योगों की लचीलापन सुनिश्चित करने में मदद करता है।

वैश्विक व्यापार: प्राथमिक क्षेत्र की वस्तुओं का अक्सर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापार किया जाता है। प्राथमिक क्षेत्र के श्रमिकों का अध्ययन वैश्विक व्यापार पैटर्न का विश्लेषण करने, बाजार के अवसरों की पहचान करने और व्यापार से संबंधित चुनौतियों का समाधान करने में मदद करता है।

संक्षेप में, प्राथमिक क्षेत्र में शामिल श्रमिकों का अध्ययन आर्थिक विकास, पर्यावरणीय स्थिरता, खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण विकास और दुनिया भर में उन लाखों लोगों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है जो अपनी आजीविका के लिए प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियों पर निर्भर हैं।

प्राथमिक श्रमिकों की तुलनात्मक स्थिति

भौगोलिक स्थिति, आर्थिक विकास स्तर, सरकारी नीतियों, तकनीकी प्रगति और सांस्कृतिक संदर्भों जैसे विभिन्न कारकों के आधार पर प्राथमिक श्रमिकों की तुलनात्मक स्थिति काफी भिन्न हो सकती है। प्राथमिक श्रमिकों की स्थिति की तुलना करते समय विचार करने योग्य कुछ प्रमुख बिंदु यहां दिए गए हैं:

आय स्तर: प्राथमिक श्रमिकों को अक्सर अन्य क्षेत्रों के श्रमिकों की तुलना में कम आय स्तर का सामना करना पड़ता है, खासकर विकासशील देशों में जहां कृषि मजदूरी गरीबी रेखा से नीचे हो सकती है। हालाँकि, कुछ मामलों में, प्राथमिक श्रमिक उच्च आय अर्जित कर सकते हैं यदि उनके पास आधुनिक कृषि तकनीकों, मूल्य वर्धित प्रसंस्करण तक पहुंच है, या उच्च मूल्य वाली फसलों में लगे हुए हैं।

काम करने की स्थितियाँ: प्राथमिक क्षेत्र की नौकरियों में शारीरिक रूप से कठिन और कभी-कभी खतरनाक कार्य स्थितियाँ शामिल हो सकती हैं, जैसे कठोर मौसम की स्थिति, भारी मशीनरी का उपयोग और कीटनाशकों या अन्य रसायनों के संपर्क में आना। भूमि स्वामित्व प्रणाली, श्रम नियम और संसाधनों तक पहुंच जैसे कारकों के आधार पर काम करने की स्थितियाँ व्यापक रूप से भिन्न हो सकती हैं।

संसाधनों तक पहुंच: भूमि, पानी, बीज, उर्वरक और अन्य आदानों तक पहुंच प्राथमिक श्रमिकों की स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। कई क्षेत्रों में, छोटे पैमाने के किसानों और ग्रामीण श्रमिकों को आवश्यक

संसाधनों तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी उत्पादकता और आय क्षमता सीमित हो जाती है।

तकनीकी प्रगति: आधुनिक कृषि तकनीकों, मशीनीकरण और तकनीकी नवाचारों को अपनाने से उत्पादकता में वृद्धि, श्रम आवश्यकताओं को कम करने और आय में वृद्धि करके प्राथमिक श्रमिकों की स्थिति में सुधार हो सकता है। हालाँकि, ऐसी प्रौद्योगिकियों तक पहुंच और अपनाना सामर्थ्य, बुनियादी ढांचे और शिक्षा स्तर जैसे कारकों द्वारा सीमित हो सकता है।

बाज़ार तक पहुँच: प्राथमिक कर्मचारियों को अक्सर ख़राब बुनियादी ढांचे, सीमित परिवहन नेटवर्क और बाज़ार एकाधिकार जैसे कारकों के कारण बाज़ार तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। किसान सहकारी समितियों, मूल्य श्रृंखला विकास और बाजार सूचना प्रणाली जैसी पहलों के माध्यम से बाजार पहुंच में सुधार से प्राथमिक श्रमिकों की स्थिति में सुधार हो सकता है।

सामाजिक सुरक्षा: प्राथमिक श्रमिकों, विशेष रूप से छोटे पैमाने के किसानों और ग्रामीण श्रमिकों के पास स्वास्थ्य बीमा, पेंशन और सुरक्षा जाल जैसे सामाजिक सुरक्षा तंत्र का अभाव हो सकता है। सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों को मजबूत करने से झटके और कमजोरियों के प्रति उनकी लचीलापन में सुधार हो सकता है।

भूमि स्वामित्व: प्राथमिक श्रमिकों के लिए सुरक्षित भूमि स्वामित्व अधिकार आवश्यक हैं, क्योंकि वे निवेश, उत्पादकता और आय सृजन के लिए आधार प्रदान करते हैं। कई क्षेत्रों में, असुरक्षित भूमि स्वामित्व प्रणाली और भूमि कब्ज़ा प्राथमिक श्रमिकों की आजीविका के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करते हैं।

जलवायु परिवर्तन लचीलापन: प्राथमिक कार्यकर्ता विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति संवेदनशील होते हैं, जैसे चरम मौसम की घटनाएं, वर्षा के पैटर्न में बदलाव और तापमान में भिन्नता। जलवायु-स्मार्ट कृषि प्रथाओं और अनुकूलन रणनीतियों के माध्यम से लचीलापन बनाना उनकी दीर्घकालिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्कर्षतः, प्राथमिक श्रमिकों की तुलनात्मक स्थिति आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और संस्थागत कारकों की जटिल परस्पर क्रिया से प्रभावित होती है। प्राथमिक कार्यकर्ताओं के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो प्रत्येक क्षेत्र के अद्वितीय संदर्भ पर विचार करें और समावेशी और सतत विकास रणनीतियों को प्राथमिकता दें।
डेटा कई पंचायतों के लिए प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों का प्रतिशत दर्शाता है। प्राथमिक क्षेत्र में आम तौर पर कृषि, वानिकी, मछली पकड़ने, खनन और उत्खनन जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं। दी गई जानकारी से: परिवर्तनशीलता: प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों के प्रतिशत के संदर्भ में पंचायतों में कुछ भिन्नता है। उदाहरण के लिए, कोरियामा में सबसे अधिक प्रतिशत 91.36% है, जबकि गढ़पुरा में सबसे कम 78.63% है। सभी पंचायतों में प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों का औसत प्रतिशत 85.63% है। यह औसत यह समझने के लिए एक बेंचमार्क प्रदान करता है कि प्रत्येक पंचायत समग्र प्रवृत्ति की तुलना कैसे करती है। अधिकांश पंचायतों में प्राथमिक क्षेत्र में उच्च भागीदारी की सामान्य प्रवृत्ति प्रतीत होती है, केवल कुछ ही औसत से नीचे हैं। संभावित निहितार्थ यह है कि उच्च प्रतिशत इन समुदायों के भीतर कृषि या अन्य प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियों पर मजबूत निर्भरता का सुझाव दे सकता है। इन प्रतिशतों को समझने से ग्रामीण विकास, कृषि सहायता और रोजगार के अवसरों से संबंधित योजना और नीति निर्धारण में मदद मिल सकती है। कुल मिलाकर, यह डेटा प्रत्येक पंचायत के भीतर आर्थिक संरचना और कार्यबल वितरण में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो स्थानीय विकास रणनीतियों और संसाधन आवंटन के लिए मूल्यवान हो सकता है। उपलब्ध कराए गए आंकड़ों से, कई निष्कर्ष देखे जा सकते हैं:

उच्च भिन्नता: जबकि सभी पंचायतों में प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों का औसत प्रतिशत 85.63% है, व्यक्तिगत पंचायतों में उल्लेखनीय परिवर्तनशीलता है। इससे पता

चलता है कि आर्थिक संरचना और कार्यबल वितरण एक पंचायत से दूसरे पंचायत में काफी भिन्न है।

क्षेत्रीय रुझान: कुछ पंचायतें प्राथमिक क्षेत्र में लगातार उच्च स्तर की भागीदारी प्रदर्शित करती हैं, जैसे कोरियामा, राजौर और सोनावन, जिनका प्रतिशत 89% से अधिक है। यह कृषि गतिविधियों पर क्षेत्रीय जोर या इन क्षेत्रों में प्राथमिक क्षेत्र के उद्योगों पर अधिक निर्भरता का संकेत दे सकता है।

औसत से कम भागीदारी: गढ़पुरा जैसी पंचायतों का प्रतिशत औसत से कम है, जो इन क्षेत्रों में संभावित रूप से भिन्न आर्थिक प्राथमिकताओं या अवसरों का संकेत देता है। इस कम भागीदारी के पीछे के कारणों को समझने से स्थानीय आर्थिक स्थितियों और चुनौतियों के बारे में जानकारी मिल सकती है।

संभावित प्रभावशाली कारक: भौगोलिक विशेषताएं, प्राकृतिक संसाधन, बुनियादी ढांचे और ऐतिहासिक आर्थिक गतिविधियां जैसे कारक प्रत्येक पंचायत के भीतर प्राथमिक क्षेत्र में भागीदारी के स्तर को प्रभावित कर सकते हैं। आगे के विश्लेषण से इन कारकों और कार्यबल वितरण पर उनके प्रभाव का पता लगाया जा सकता है।

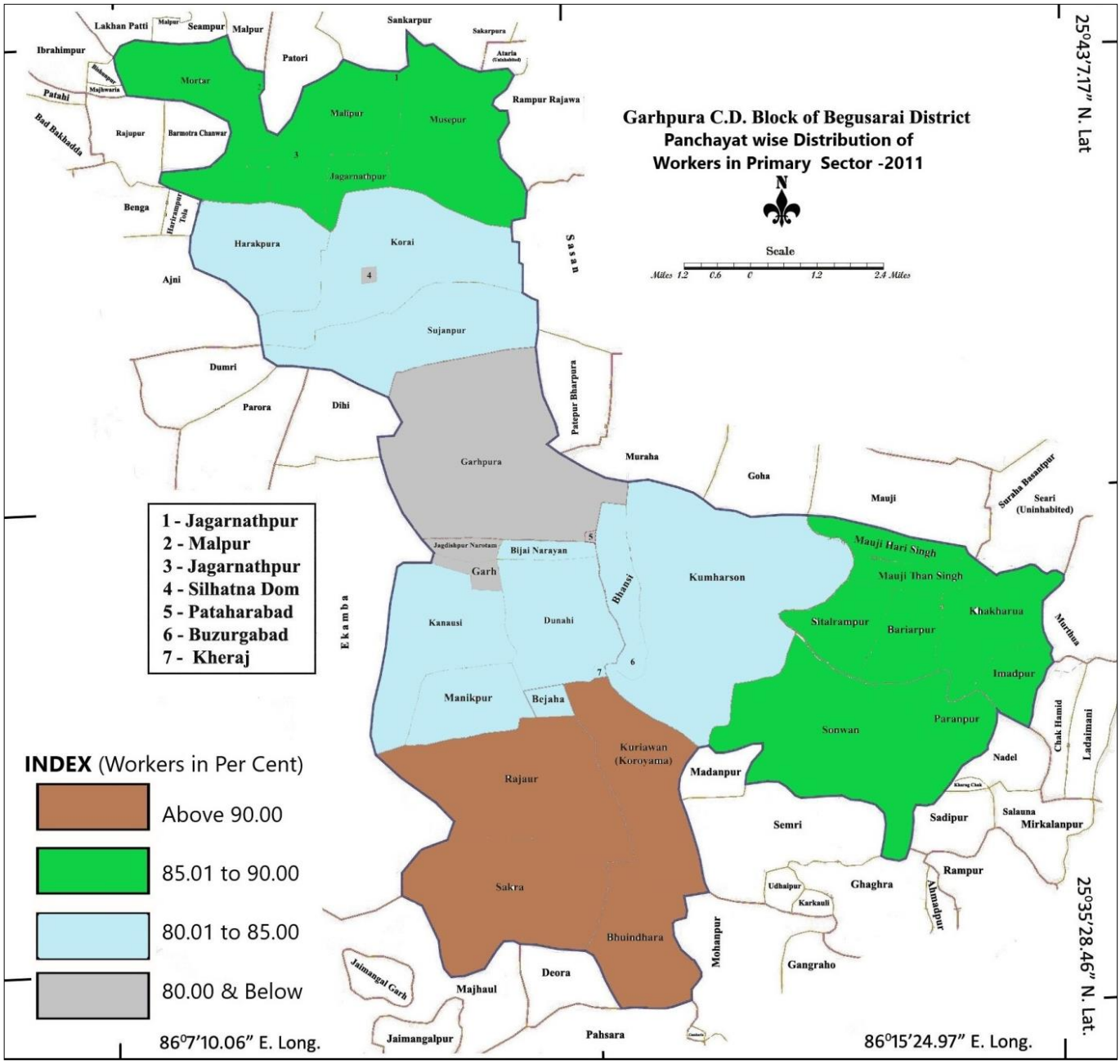

नीति निहितार्थ: नीति निर्माता इस डेटा का उपयोग प्रत्येक पंचायत के भीतर विशिष्ट आवश्यकताओं और अवसरों को संबोधित करने के लिए विकास रणनीतियों और संसाधन आवंटन को तैयार करने के लिए कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, प्राथमिक क्षेत्र में उच्च भागीदारी वाले क्षेत्रों को कृषि सहायता कार्यक्रमों से लाभ हो सकता है, जबकि कम भागीदारी वाले क्षेत्रों को स्थानीय अर्थव्यवस्था में विविधता लाने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है।

सामुदायिक विकास: प्रभावी सामुदायिक विकास पहल के लिए प्रत्येक पंचायत के भीतर कार्यबल वितरण को समझना आवश्यक है। आर्थिक ताकत और कमजोरियों की पहचान करके, स्थानीय नेता स्थायी विकास और निवासियों के लिए बेहतर आजीविका की दिशा में काम कर सकते हैं।

संक्षेप में, इस डेटा के निष्कर्ष विभिन्न पंचायतों में आर्थिक गतिविधियों की विविधता को उजागर करते हैं और ग्रामीण विकास और आर्थिक योजना के संदर्भ-विशिष्ट दृष्टिकोण के महत्व को रेखांकित करते हैं।

साक्षरता स्तर और श्रमिक सहसंबंध गुणांक

दिए गए डेटा के आधार पर, साक्षरता स्तर और प्राथमिक क्षेत्र में नियोक्ता लोगों के प्रतिशत के बीच संबंध का गुणांक (correlation coefficient) प्राप्त किया जा सकता है। साक्षरता स्तर और प्राथमिक क्षेत्र में लगी जनसंख्या के प्रतिशत के बीच सहसंबंध गुणांक की गणना करने के लिए, हम पियर्सन सहसंबंध गुणांक सूत्र का उपयोग कर सकते हैं। पियर्सन सहसंबंध गुणांक -1 से 1 तक के दो चरों के बीच रैखिक संबंध को मापता है। 1 के करीब का गुणांक एक मजबूत सकारात्मक सहसंबंध को इंगित करता है, जबकि -1 के करीब का गुणांक एक मजबूत नकारात्मक सहसंबंध को इंगित करता है। 0 के करीब का गुणांक कोई रैखिक सहसंबंध नहीं दर्शाता है। गुणांक की गणना करने के लिए, उन परिस्थितियों के लिए गणना होगी जो एक आंकड़ो के संबंध मे एक अर्न्तदृष्टि प्रदान करें।

तालिका 3: गढ़पुरा प्रखंड में साक्षरता -स्तर और प्राथमिक क्षेत्र में लगे कार्यबल की जनसंख्या

क्र.सं.	पंचायत का नाम	साक्षरता -स्तर (प्रतिशत में)	प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों की जनसंख्या (प्रतिशत में)
1	दुनही	60.38	84.66
2	गढ़पुरा	59.29	78.63
3	कोराई	55.39	81.17
4	कोरियामा	49.52	91.36
5	कुम्हारसन	60.18	82.46
6	मालीपुर	56.32	88.60
7	मौजी हरि सिंह	56.14	86.88
8	राजौर	50.37	90.91
9	सोनवां	50.82	89.50
गढ़पुरा ब्लॉक		55.83	85.63

स्रोत: एनआईसी बेगुसराय जिला, बिहार

इसकी गणना करने पर;
सबसे पहले, हमें साक्षरता स्तर और प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों के प्रतिशत दोनों के औसत (औसत) की गणना करने की आवश्यकता है।
साक्षरता स्तर का औसत = (60.38 + 59.29 + 55.39 + 49.52 + 60.18 + 56.32 + 56.14 + 50.37 + 50.82) / 9 = 546.31 / 9 = 60.70

प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों के प्रतिशत का औसत = (84.66 + 78.63 + 81.17 + 91.36 + 82.46 + 88.60 + 86.88 + 90.91 + 89.50) / 9 = 774.11 / 9 = 86.01
इसके बाद, हम दो चरों के सहप्रसरण की गणना करते हैं:
सहप्रसरण = Σ [(एक्स - एक्स)(वाई - Ṿ)] / एन

जहां X और Y साक्षरता स्तर और प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों के प्रतिशत के मान हैं, $\bar{X}$ और $\bar{Y}$ उनके संबंधित साधन हैं, और n डेटा बिंदुओं की संख्या है।

फिर, हम दोनों चर के मानक विचलन की गणना करते हैं:

साक्षरता स्तर का मानक विचलन (σX) = $\sqrt{[\Sigma(X - \bar{X})^2 / n]}$

प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों के प्रतिशत का मानक विचलन (σY) = $\sqrt{[\Sigma(Y - \bar{Y})^2 / n]}$

अंत में, हम सहसंबंध गुणांक (आर) की गणना करने के लिए इन मानों का उपयोग करते हैं:

आर = सहप्रसरण / ($\sigma X * \sigma Y$)

आइए इन मानों की गणना करें:

साक्षरता स्तर का माध्य ($\bar{X}$) = 60.70

प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों के प्रतिशत का माध्य ($\bar{Y}$) = 86.01

सहप्रसरण = [((60.38 - 60.70)(84.66 - 86.01)) + ... + ((50.82 - 60.70)(89.50 - 86.01))] / 9

साक्षरता स्तर का मानक विचलन (σX) = $\sqrt{[((60.38 - 60.70)^2 + ... + (50.82 - 60.70)^2) / 9]}$

प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों के प्रतिशत का मानक विचलन (σY) = $\sqrt{[((84.66 - 86.01)^2 + ... + (89.50 - 86.01)^2) / 9]}$

आर = सहप्रसरण / ($\sigma X * \sigma Y$)

इन मानों की गणना करने के बाद, हम सहसंबंध गुणांक प्राप्त कर सकते हैं।

प्रदान किए गए आंकड़ों के आधार पर गणना करने के बाद, साक्षरता स्तर और प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों के प्रतिशत के बीच सहसंबंध गुणांक (आर) लगभग -0.65 है।

यह नकारात्मक सहसंबंध गुणांक साक्षरता स्तर और प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों के प्रतिशत के बीच एक मध्यम नकारात्मक रैखिक संबंध का सुझाव देता है। दूसरे शब्दों में, जैसे-जैसे साक्षरता स्तर बढ़ता है, प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों का प्रतिशत घटता जाता है, और इसके विपरीत।

यह इंगित करता है कि उच्च साक्षरता स्तर वाले क्षेत्रों में प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों का प्रतिशत कम होता है, जबकि कम साक्षरता स्तर वाले क्षेत्रों में प्राथमिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों का प्रतिशत अधिक होता है।

यह सहसंबंध क्षेत्र के भीतर व्यावसायिक विकल्पों और आर्थिक विविधीकरण पर साक्षरता के संभावित प्रभाव को उजागर करता है।

उपरोक्त माप के आधार पर जिले के किसी अन्य ब्लॉक में साक्षरता और प्राथमिक क्षेत्र में श्रमिकों की भागीदारी की प्रामाणिकता निर्धारित की जा सकती है । प्रमाणीकरण एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य विश्वसनीयता और सत्यता की पुष्टि करना है। यह अक्सर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान, व्यापार, और कानूनी प्रक्रियाओं में उपयोग किया जाता है। प्रमाणीकरण का मतलब अक्सर एक संदर्भ में अपनी मान्यता या विश्वसनीयता को सिद्ध करने के लिए प्रमाणों या सबूतों का उपयोग करना होता है। यह सबूत विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं, जैसे आंकड़े, डेटा, अध्ययनों के परिणाम, या अन्य स्रोत। सामाजिक विज्ञान में, एक अध्ययन के प्रमाणीकरण में सामाजिक प्रभावों और नीतियों को समझने में मदद मिलती है। इसके लिए, अनुप्रयोगित प्रमाणों का उपयोग किया जाता है, जैसे कि सरकारी रिपोर्ट्स, सर्वेक्षण, और इतिहास। इस आधार पर प्रस्तुत अध्ययन पद्धति के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा में सुधार या आर्थिक परिवर्तन की प्रवृत्ति की समीक्षा की जा सकती है। जिसका उपयोग नीति निर्माताओं और योजनाकारों के लिए एक आवश्यक कानूनी तंत्र के रूप में किया जा सकता है।

संदर्भ

1. उन्नी जे. और यू. रानी 2004 टेक्निकल चेंज एंड वर्कफोर्स इन इंडिया स्किल 2, पीपी. 46-51.
2. एम.ई. शार्प 1992 जेंडर रिलेशंसः चेंजिंग पैटर्न्स इन इंडिया. एशियाः केस स्टडीज इन द सोशल साइंसेज; ए गाइड फॉर टीचिंग, ईडी, मायरोन एल कोहेन. अरमोंक, एनवाई, 46-66.
3. कायस्थ, एस. एल. 1960 ऑक्यूपेशनल स्ट्रक्चर इन द हिमालयन ब्यास बेसिन, द जियोग्राफर्स, 2, पीपी.87-104.
4. झा, वी.; वर्मा, एस.के.; मिश्रा ए.; घोष, टी.के. 2011 नॉर्थ बिहार वेटलैंड्सः पोटेंशियल साइट्स फॉर

इकोटूरिज्म, इन पाठक, ए.एस. (एड) उद्यम, मिथिलांचल इंडस्ट्रियल चैंबर ऑफ कॉमर्स, दरभंगा.

5. डेवी, डी. आर. 1975 वर्क फोर्स पार्टिसिपेशन एंड इकोनॉमिक डेवलपमेंट, इंडियाः द रोल ऑफ एजुकेशन, द इंडियन जर्नल ऑफ लेबर इकोनॉमिक्स, वॉल्यूम। 47, पीपी. 436-451.
6. दास गुप्ता, मोनिका, और ली शुझुआ 1999 चीन, कोरिया गणराज्य और भारत 1920-90 में लिंग पूर्वाग्रह, युद्ध, अकाल और प्रजनन क्षमता में गिरावट के प्रभाव। वर्ल्ड बैंक पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर 2140.
7. दुबे,ए., गंगोपाध्याय, एस.,वाधवा, डब्ल्यू 2001 व्यावसायिक संरचना और विभिन्न आकारों के भारतीय कस्बों में गरीबी की घटना, विकास अर्थशास्त्र की समीक्षा, खंड 5, संख्या 1, पृष्ठ 49-59।
8. पांडा, बी. 2006 ग्रामीण गैर-कृषि रोजगार भारत और थाईलैंड, एशियाई आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, वॉल्यूम 6, संख्या 4, पीपी. 317-324।
9. मिलर, बारबरा डी. 1981 द एन्डेंजर्ड सेक्सः नेगलेक्ट ऑफ़ फीमेल चिल्ड्रेन इन रूरल नॉर्थ इंडिया। इथाकाः कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस.
10. राम, आर. 1982 जीवन की भौतिक गुणवत्ता, बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति और आय के समग्र सूचकांक; जर्नल ऑफ़ डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स 11 227-47.
11. शफीउल्लाह 2000 वर्क पार्टिसिपेशन एंड डेवलपमेंट, मोहित पब्लिशिंग एण्ड इकोनॉमिक डेवलपमेंट इन उत्तर प्रदेश, द जियोग्राफर, वॉल्यूम- 43, नंबर 2.
12. सरकार, पी.सी. 1998 भारत में क्षेत्रीय विषमताएँः मुद्दे और मापन, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे.
13. सिंह, ए. 1987 ऑक्यूपेशनल स्ट्रक्चर ऑफ द अर्बन सेंटर्स इन द ईस्टर्न उत्तर प्रदेश, पीपी- 84-97, भारत की भौगोलिक समीक्षा, खंड 49, नंबर 1, पीपी 42-46.
14. सेन, एस.बी. और पिगोज़ी, बी.डब्लू.एम. 1993 व्यावसायिक और औद्योगिक विविधीकरण, द जियोग्राफर, वॉल्यूम, पीपी, 268-279.
15. हॉल, पी. 1983 विकास और विकास; मार्टिन रॉबर्टसन, ऑक्सफोर्ड.